KAYTHA & MALVA CHALCOLIHTIC CULTURE

Dr. Dilip Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Ancient Indian History & Archaeology,
Patna University, Patna
Paper – CC- XI, Sem - III

KAYTHA CHALCOLITHIC CULTURE:-

भारत के मध्य प्रदेश के अंतर्गत इस मालवा की पठारी भूभाग जो नर्मदा और उसकी सहायक नदी ताप्ती तथा बेतवा द्वारा सिंचित होती है, ताम्र पाषाणिक संस्कृति के अध्ययन के दृष्टिकोण से अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र के प्रमुख ताम्र पाषणिक पुरास्थलों का एरण, त्रिपुरी, नवदाटोली एवं महेश्वर विशेष रुप से उल्लेखनीय है – इनमें कायथा स्थल के उत्खनन से मालवा संस्कृति से शतब्दियों पूर्व विकसित एक समृद्ध ताम्र पाषाणिक संस्कृति का पता चला। इस स्थल को प्रकाश ममें लाने का श्रेय V.S. वालंकर को है। उन्होंने 1965–66 के काल में उत्खनन कार्य का संचालन किया। यद्यपि विस्तृत पैमाने पर इस स्थल का उत्खनन कार्य विक्रम विश्वविद्यालय – उज्जैन तथा डेक्कन कॉलेज पूना के संयुक्त तत्वाधान में 1968 ई० में सम्पन्न हुआ।

कायपा पुरास्थल उज्जैन से 25 किलोमीटर पूरब की दिशा में चम्बल की सहायक नदी काली सिंधु के किनारे स्थित है। इस स्थल से उत्खनन द्वारा 5 संस्कृति कालों के अवशेष प्रकाश में आए जिसमें प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय कालखंड ताम्र पाषाणिक संस्कृति से संबंधित है। इस स्थल के प्रथम कालखंड को कायथा संस्कृति की संज्ञा दी गयी। दूसरे कालखं डमें आहर संस्कृति का साक्ष्य मिला है तथा तीसरा कालखंड मालवा संस्कृति संबंधित है।

प्रथम कालखंड में चाक निर्मित मृदभांड 3 प्रकार के है यथा भूरे रंग की पात्र परम्परा, पांडुरंग की परम्परा, लाल रंग की पात्र परम्परा, Brown sliped ware के प्रमुख प्रकार है – हांडी, तसले, कंटारे संग्रह के लिए प्रयुक्त मटके आदि, पात्रों पर बैंगनी रंग का रेखाचित्र मिलता है – पांडुरंग के पात्रों के मुख्य आकार है – लोटे,

घड़े, तसले आदि। इन पात्रां पर लाल रंग से चित्रित अभिप्राय मिलते है। चित्रित अभिप्राय ज्यामितिक है। Plane Red Ware या लाल रंग के मृदभांडों में प्रमुख प्रकार के कटोरे एवं तसले इन पात्रों पर कंधे की तरह किसी उपकरणों से बर्तनों को आरेखित किया गया है इसलिए इसे Combed Ware भी कहते है। रेखाओं में लहरदार रेखाए आदि बर्तनों के उपर आरेखित है। इसके अलावें हस्त निर्मित रुक्ष प्रकार के लाल एवं भूरे रंग के बर्तन भी मिले है। कायथा मृदभांड पर मिलने वाले अलंकरण आमरी, कोटदीजी, कालीबंगा के चित्रण अभिप्रायों से मितले–जुलते है। कायथा के निचले स्तरों का विस्तृत उत्खनन नहीं किया गया था फिर भा इस बात के संकेत मिलते है कि इस संस्कृति के लोग खंभे गाड़कर गोलाकार तथा चौकोर घरों का निर्माण करते थे। मकानों की दीवारे बाँस बल्ली से बनी होती थी और उसे मिट्टी के गारे स लेपकर उसे स्वरुप दिया जाता था।

इस कालखंड से तांबे की कुल्हाड़ियों, छेनी, सुइया, लघु पाषाण उपकरण तथा सेलखड़ी, गोमेद, Agate, Carnelian, स्फटिक के बने मनके की प्राप्त हुई है। तांबे की दो कुल्हाड़ी जिसका निर्माण सांचे में डालकर किया गया था, एक मकान से प्राप्त घड़े में मिली थी। तांबे की कुल्हाड़ियों की संख्या करीब 28 है, हल्के रत्नों के मनके की क्रमशः 160 से 175 मनकों से युक्त दो घरों की गणना महत्वपूर्ण पुरावेशष में की जा सकती है। लघु पाषाण उपकरण में मुख्य प्रारुप है point, blade आदि। इस कालखंड की तिथि 2000 से 1800 ई० पू० के मध्य निर्धारित की जा सकती है। इस प्रकार कायथा संस्कृति के लोग मालवा क्षेत्र के पहले निवासी थे जिन्होंने मकान बनाकर स्थाई रुप से रहना प्रारंभ किया। इन मृदभांडों की परम्परा के प्रकारों तथा ताम्र उपकरणों एवं हल्के रत्नों के बने मनकों के आधार पर कहा जा सकता है कि कायथा संस्कृति के लोग अपने उन्नत तकनीक के साथ संभवतः कहीं बाहर से आकर इस क्षेत्र में बसें।

कायथा संस्कृति का दूसरा कालखंड आहड़ संस्कृति से संबंधित है। इस कालखंड का नाम मृदभांड परम्परा के आधार पर किया गया। मृदभांड परम्परा में

काले रंग या कृपणलोहित मृदभांड के उपर श्वेत रंग से चित्रित आहड़ की ही भाँति है। इस काल खंड से point, blade आदि लघु पाषाण उपकरण बड़ी संख्या में प्राप्त हुए यद्यपि आहड़ संस्कृति में इसका सर्वधा अभाव था। कायथा से प्राप्त वृषभ की मूर्तियाँ विशेष रुप से उल्लेखनीय है। हार तथा मिट्टी के मनकों का भी विशेष उल्लेख किया जा सकता है। इस संस्कृति के स्तरों के उपर अग्निकांड के साक्ष्य मिले है। इस कालखंड को 1700 से 1500 ई० पू० के बीच निर्धारित किया गया है।

कायथा का तीसरा कालखंड मालवा संस्कृति के नाम से जाना जाता है। इस काल खंड में मालवा मृदभांड परम्परा के अतिरिक्त वृषभ मूर्तियाँ इस काल खंड में मिलती है। इस काल के लघु पाषाण उपकरणों में Blade की अधिकता है, इस कालखंड की तिथि 1500 से 1200 ई० पू० के बीच निर्धारित की गई है। कायथा मी आहड़ एवं मालवा संस्कृति में Overlaping दिखाई पड़ती है।

MALVA CHALCOLITHIC CULTURE

मध्य प्रदेश के नर्मदा तट क महेश्वर एवं नवदाटोली तथा इंदौर एवं उज्जैन के बीच कुछ स्थलों से जिस ताम्र पाषाणिक संस्कृति के अवशेष मिले हे उसे मालवा संस्कृति की संज्ञा दी गई है। फिर कायथा स्थल के उत्खनन से मालवा संस्कृति से शतब्दियों पूर्व विकसित एक समृद्ध ताम्र पाषणिक संस्कृति का पता चला। इसके अरिरिक्त एरन–नागदा स्थलों से ताम्र पाषाणिक जीवन–यापन के चिन्ह मिले है, परंतु इनमें कायथा और नवदाटोली दो सबसे महत्वपूर्ण उत्खनित स्थल है और इन स्थलों से प्राप्त सामग्री पूरी की पूरी प्रकाशित हो चुकी है। कायथा स्थल उज्जैन से 25 मील की दूरी पर स्थित है। इस स्थल के पहले कालखंड को कायथा संस्कृति की संज्ञा दी गयी है। इस कालखं डमें चाक निर्मित मृदभांड के तीन मुख्य प्रकार तांबे की अनेक कुल्हाड़ियों, छेनी, चूड़ियाँ लघु पाषाण उपकरण तथा सेलखड़ी, गोमेद जैसे अर्द्ध कीमती हल्के रत्नों के बने मनके भी प्राप्त हुए है। इस कालखंड की तिथि 2200 से 2000 ई० पू० के बीच निर्धारित की गई है।

इस स्थल के दूसरे कालखंड में आहड़ संस्कृति का साक्ष्य मिला है जो दक्षिण–पूर्वी राजस्थान में पाई गई। कायथा का तीसरा कालखंड उस संस्कृति से संबंध रखता है जिसे मालवा ताम्र पाषाणिक संस्कृति की संज्ञा दी गयी है और इसका सबसे उपयुक्त स्वरुप नवदाटोली स्थल पर पाया गया है। नवदाटोली एवं माहेश्वर इंदौर से 50 मील दक्षिण में नर्मदा के तट पर स्थित है नवदाटोली स्थल पर उत्खनन के द्वारा दो सामग्री प्रकाश में आई उसे 4 कालखंडों में विभाजित किया गया है। कालखंड I में बनास या आहड़ प्रकार के काले एवं लाल मृदभांड के नमूने मिले है, कालखंड II से cream sliped ware मिला है कालखंड III से काले एवं लाल मृदभांड के नमूने मिले है। कालखंड IV से चमकीले लाल मृदभांड के नमूने मिले है पर इन चारों कालखंडों में काले एवं लाल मृदभांड जिसे मालवा मृदभांड कहा जाता है, विद्यमान है। इन चारों कालखंडों से प्राप्त भौतिक सामग्री में कोई विशेष परिवर्तन दिखाई नहीं पड़ता। इस स्थल से प्राप्त मिट्टी, बाँस और फूस के बने घर के अवशेष दो प्रकार के है – चौकोर एवं वृताकार। वृताकार घरों का व्यास 303 से 15 फीट तक है। चौकोर घर साधारणता 15–22 फीट तक लम्बे थे। छोटे–छोटे वृताकार घर संभवतः अन्न रखने की कोठियाँ थी। फर्श और दीवारों पर चूने का लेप लगाया जाता था। घर पास–पास बने होते थे परंतु दो घरो के बीच रास्ता होता था। कालखंड 1 के घरों की औसत माप 10ft X 8ft था और वृताकार घरों का माप जो गन्न रखने की कोठियां थी वह 4ft X 4ft था।

कालखंड 2 के मकान आकार में छोटे थे कालखंड 1 से मसूर, उड़द, मटर, चना गेहूँ के दो किस्म थे चना आदि फसलों के उगाने के साक्ष्य मिले है। तेलहन के नमूने भी मिली है। इसके अलावे फलों के बेर और आँवला के भी प्रमाण मिले है, इसमें भोज्य वस्तुओं के अतिरिक्त इस संस्कृति से संबंध लोग सूअर, माँस आदि भी रखते थे।

लघु पाषाण के उपकरणों का पर्याप्त रुप से उपयोग किया गया है। हर एक घर का आदमी अपने जरुरत के उपकरण स्वयं बनाता था। उपकरणों में मुख्य आकार

है – समानांतर बाहु ब्लेड, गोथरे पार्श्व ब्लेड, त्रिभूज ,चतुर्भुज आदि। इस स्थल से उपलब्ध मनके Agate, Carnelian, सेलखड़ी जैसे अर्द्धकीमती पत्थरों से बने है। तांबे की बनी वस्तुओं में चिपटी कुल्हाड़ियाँ अंगुठियां, चूड़ियाँ, मछली पकड़ने के काँटे, छेनियाँ बानाग आदि के नमूने मिले है। उपकरण को हथौड़ा से पीटकर बनाया गया है। इस स्थल के ताँबे में 3 प्रतिशत टिन और 2 प्रतिशत शीशा मिश्रित था।